।। क्रमी नर को अंग ।।मारवाडी + हिन्दी

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधािकसनजी महाराज और जे.टी.चांडक इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे, समजसे, अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नहीं करना है। कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नहीं हुआ, उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढ़नेके लिए लोड कर दी।

ाम स्थाप जळ पाहण घी कूप ।। झूट गुल आग न झेले ।। बाळक संग जवान ।। हैण नर सेज न खेले ।। बाळक संग जवान ।। हैण नर सेज न खेले ।। बा तर छिवे न घाव ।। आंधळो चाव न देखे ।। काळी फन न रंग चडे ।। लाखां करो फपाय ।। प्याप मुँ क्रमी नर सुखराम के ।। याज लेत बिन पेखे ।। जाळी फन न रंग चडे ।। लाखां करो फपाय ।। प्राप आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,िक कर्मी मनुष्य जिसके पहले के नरकीय कर्म कर रहा है ऐसे कर्मी मनुष्य के बारेमे कह रहे हैं । जें पत्थर पे पानी पडा या पत्थर पानी मे रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नहीं सकता इं तरह से कर्मी मनुष्य में ज्ञान नहीं भेदता और कूपा घी रखने का बर्तन होता है उसे राम भेदता नहीं । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी विन्गारी से सेमल वं संग कई को आग पकडती । मतलब सेमल की कई झूठी होगी तो आग नहीं पकडती है वें सम संसार का खेल, खेल नहीं सकता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजड़ा स्थाप संसार का खेल, खेल नहीं सकता है वें ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजड़ा स्थाप हों कर्मी क्षा परख नहीं हों कर्मी मनुष्य ज्ञान चहीं लगता है । जैसे बेहा कर्मी मनुष्य ज्ञान चहीं लगता है । केंसे वें हो कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । जैसे कर्मी कर्म क्रा एक हुई बनाये परख वहीं है कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य कें ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य कें ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य कें ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय केंं कुकर्मी ।। पाम पाम पाम पाम सुष्य स्वता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।। पाम पाम पाम क्रम का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता हो जाता है वेसा कर्मी जीव वाल स्वता है सम्पूर्य सुरुरा में का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता हो । मोतीबिंदु ऑपरे पाम क्री का नशु सुरुरा सुरुर सुरुरा के प्रकार। ऐसा हो कमी जीव ज्ञान में रह नहीं सकता ऐसा हो कमी जीव ज्ञान में रह नहीं सकता ऐसा हो कमी जीव ज्ञान में रह नहीं सकता हो पाम हो काता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे पाम क्री का नशुर सुरुरा के प्रा मनुष्य सुरुरा के प्रकार में रह नहीं सकता ऐसा हो कमी जीव ज्ञान में रह नहीं सकता हो पाम हो सहता हो साम जाता हो । मोतीबिंदु ऑपरे	्राम
जळ पाहण घी कूप ।। झूट गुल आग न झेले ।। बाळक संग जवान ।। हैंण नर सेज न खेले ।। बग तर छिवे न घाव ।। आंधळो चाव न देखे ।। लाडू किया अनेक ।। चाख लेत बिन पेखे ।। काळी ऊन न रंग चडे ।। लाखां करो ऊपाय ।। यूँ क्रमी नर सुखराम के ।। ग्यान मिदे नही आय ।। १ ।। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते हैं,कि कर्मी मनुष्य जिसके पहले के नरकीय व है तथा और भी नरकीय कर्म कर रहा है ऐसे कर्मी मनुष्य के बारेमे कह रहे हैं । जैं पत्थर पे पानी पड़ा या पत्थर पानी में रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नहीं सकता इ तरह से कर्मी मनुष्य में ज्ञान नहीं भेदता और कूपा घी रखने का बर्तन होता है उसे राम फई को आग पकडती । मतलब सेमल की रुई झूठी होगी तो आग नहीं पकड़ती है वै सम कर्क को आग पकडती । मतलब सेमल की रुई झूठी होगी तो आग नहीं पकड़ती है वै सम संसार का खेल,खेल नहीं सकता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजड़ा स्थाम संसार का खेल,खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान थारण नहीं कर सक संग संसार का खेल,खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान थारण नहीं कर सक संग संसार का खेल,खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं देग सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । जेसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । साथ खेल करीं मुँ कर्मी ।। ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अर्ड पोपा कूं विमीं ।। ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अर्ड पोपा कूं विमीं ।। च्यूँ कर्म होण के नहीं बणे ।। साथ संगत को जोग ।। च्यू कर होण के नहीं बणे ।। साथ संगत को जोग ।। दाख परका है पुष्य को नहीं होणे ।। साथ संगत को जोग ।। वाख परका मुख को नहीं होणे ।। साथ संगत को जोग ।। वाख परका है पुष्य के एक्स होण को नहीं होणा के नहीं बणे । साथ संगत को जोग ।। वाख परका है पुष्य के एक्स होण का नहीं हो	राम
बाळक संग जवान ।। हैण नर सेज न खेले ।। बग तर छिवे न घाव ।। आंधळो चाव न देखे ।। लाडू किया अनेक ।। चाख लेत बिन पेखे ।। राम राम राम राम राम राम राम र	राम
बग तर छिवे न घाव ।। आंधळो चाव न देखे ।। लाडू किया अनेक ।। चाख लेत बिन पेखे ।। काळी ऊन न रंग चडे ।। लाखां करो ऊपाय ।। यूँ क्रमी नर सुखराम के ।। ग्यान भिदे नहीं आय ।। १ ।। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते हैं, कि कर्मी मनुष्य के बारेमे कह रहे हैं । जैं पत्थर पे पानी पड़ा या पत्थर पानी मे रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नहीं सकता इः तरह से कर्मी मनुष्य मे ज्ञान नहीं भेदता और कूपा घी रखने का बर्तन होता है उसे भेदता नहीं । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्गारी से सेमल व रुक्त को आग पकडती । मतलब सेमल की रुई झूठी होगी तो आग नहीं पकडती है वै हो कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजडा स् संग संसार का खेल,खेल नहीं सकता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजडा स् संग संसार का खेल,खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं कर सक है । जैसे बखतर(कवच)पहन लोनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य क् ज्ञान नहीं भेद सकता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।। आक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। प्यूँ कम हीण के नहीं बणे ।। साथ संगत को जोग ।। दाख फळ्या सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव व	
लाडू किया अनेक ॥ चाख लेत बिन पेखे ॥ काळी ऊन न रंग चडे ॥ लाखां करो ऊपाय ॥ राम यूँ क्रमी नर सुखराम के ॥ ग्यान भिदे नहीं आय ॥ १ ॥ शाद सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते हैं, कि कर्मी मनुष्य जेसके पहले के नरकीय व है तथा और भी नरकीय कर्म कर रहा है ऐसे कर्मी मनुष्य के बारेमे कह रहे है । जैं पत्थर पे पानी पडा या पत्थर पानी मे रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नहीं सकता इ तरह से कर्मी मनुष्य में ज्ञान नहीं भेदता और कूपा घी रखने का बर्तन होता है उसे राम भेदता नहीं । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्गारी से सेमल व रूई को आग पकडती । मतलब सेमल की रूई झूठी होगी तो आग नहीं पकडती है वै ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजडा स् संग संसार का खेल,खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं कर सक है । जैसे बखतर(कवच)पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है वै से ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं कंपता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लेसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी । पाप अंक अंति ॥ अंड पोपा कूं चिमी ॥ पाप अंक ईख आदीत ॥ आंड पोपा कूं चिमी ॥ पाप पाप पाप कर्म होण के नहीं बणे ॥ साथ संगत को जोग ॥ दाख फळ्या सुखराम के ॥ हुवे काग के रोग ॥ २ ॥ जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव व	राम
काळी कन न रंग चडे ।। लाखां करो कपाय ।। यूँ क्रमी नर सुखराम के ।। ग्यान मिदे नहीं आय ।। १ ।। यान आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते हैं,कि कर्मी मनुष्य कि बारेमे कह रहे हैं । जैं पत्थर पे पानी पडा या पत्थर पानी में रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नहीं सकता इं तरह से कर्मी मनुष्य में ज्ञान नहीं भेदता और कृपा घी रखने का बर्तन होता है उसे प्रमा भेदता नहीं । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्नारी से सेमल के रूई को आग पकडती । मतलब सेमल की रूई झूठी होगी तो आग नहीं पकडती है वै ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजड़ा स् संग संसार का खेल, खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं कर सक है । जैसे बखतर (कवच) पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं कंपता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं के सकता । अनेक प्रकार के लड़्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य क्षान नहीं स्वर्ण ।। अई पोपा कूं चिमीं ।। पाम अक्ट ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। पाम उप्त क्रिय सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दुःख पावे ।। यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साथ संगत को जोग ।। दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव वित्र सायर के प्रकृप के साथ हो सायर के साथ करना नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे	राम
पाम यूँ क्रमी नर सुखराम के ।। ग्यान भिदे नहीं आय ।। १ ।। पाम आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते हैं,कि कर्मी मनुष्य जिसके पहले के नरकीय व है तथा और भी नरकीय कर्म कर रहा है ऐसे कर्मी मनुष्य के बारेमे कह रहे हैं । जैं पत्थर पे पानी पड़ा या पत्थर पानी में रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नहीं सकता इं तरह से कर्मी मनुष्य में ज्ञान नहीं भेदता और कृपा घी रखने का बर्तन होता है उसे पम भेदता नहीं । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्गारी से सेमल के रूई को आग पकडती । मतलब सेमल की रूई झूठी होगी तो आग नहीं पकडती है वै हो कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजड़ा स् संग संसार का खेल,खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं कर सक है । जैसे बखतर(कवच)पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वि कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं स्वर्ण ।। अई पोपा कूं विमीं ।। पाम पाम पाम अंदर सिर्पाव ।। अई पोपा कूं विमीं ।। पाम पाम पाम के स्वर्ण है प्रक्षा सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। पाम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव व स्वर्ण भी कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे	राम
आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते हैं,कि कमीं मनुष्य जिसके पहले के नरकीय व है तथा और भी नरकीय कर्म कर रहा है ऐसे कमीं मनुष्य के बारेमे कह रहे हैं । जैं पत्थर पे पानी पड़ा या पत्थर पानी मे रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नहीं सकता इ तरह से कमीं मनुष्य में ज्ञान नहीं भेदता और कूपा घी रखने का बर्तन होता है उसे पित नहीं । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्गारी से सेमल के रूई को आग पकडती । मतलब सेमल की रूई झूठी होगी तो आग नहीं पकडती है है कमीं मनुष्य ज्ञान धारण नहीं करता है । जैसे बखतर (कवच)पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कमीं मनुष्य ज्ञान वहां लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कमीं मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं स्वाय । भरे खंर मिसरी खावे ।। पाम पाम पाम पाम देख आदीत ।। आँख कारी यूँ कमीं ।। पाम पाम पाम पाम पाम पाम के नहीं बणे ।। साथ संगत को जोग ।। दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। पाम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को, मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कमीं जीव विव जाता है, उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे	राम
है तथा और भी नरकीय कर्म कर रहा है ऐसे कर्मी मनुष्य के बारेमे कह रहे है । जें पत्थर पे पानी पड़ा या पत्थर पानी मे रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नहीं सकता इं तरह से कर्मी मनुष्य मे ज्ञान नहीं भेदता और कूपा घी रखने का बर्तन होता है उसे भेदता नहीं । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्गारी से सेमल के रुई को आग पकड़ती । मतलब सेमल की रुई झूठी होगी तो आग नहीं पकड़ती है है ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजड़ा स् संग संसार का खेल,खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं कर सक है । जैसे बखतर(कवच)पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वेसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है वेसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य खान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड़्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं साम से खंर मिसरी खावे ।। पाम पाम असे देख सायर नीर ।। अई पोपा कूं चिमी ।। पाम पाम पाम खंर कराता है । साथ संगत को जोग ।। दाख फळ्या सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। पाम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव वाल में पाम कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं। मोतीबिंदु ऑपरे	र्म राम
पत्थर पे पानी पड़ा या पत्थर पानी मे रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नही सकता इं तरह से कर्मी मनुष्य मे ज्ञान नही भेदता और कूपा घी रखने का बर्तन होता है उसे भेदता नही । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्गारी से सेमल के रुई को आग पकडती । मतलब सेमल की रुई झूठी होगी तो आग नही पकडती है वे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नही करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजड़ा स् संग संसार का खेल,खेल नही सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नही कर सक है । जैसे बखतर(कवच)पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड़्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । स्वर्मी ।। प्राप्त के स्वर्म प्राप्त के नहीं बणे ।। साथ संगत को जोग ।। पाम प्राप्त के नहीं बणे ।। साथ संगत को जोग ।। दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। पाम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव वाल पर्या के प्रवर्म के ।। स्वर्म के प्रवर्म के स्वर्म के प्रवर्म	से
तरह से कर्मी मनुष्य मे ज्ञान नहीं भेदता और कूपा घी रखने का बर्तन होता है उसे राम भेदता नहीं । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्नारी से सेमल के रूई को आग पकडती । मतलब सेमल की रूई झूठी होगी तो आग नहीं पकडती है वै राम रही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजड़ा संग संसार का खेल,खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं कर सक है । जैसे बखतर(कवच)पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड़्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं भेद सकता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ९ ।। आक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अई पोपा कूं चिमीं ।। पर्य दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दु:ख पावे ।। युँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। दाख फळ्या सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव विस्तर से प्रवास के । स्वत्र के एक स्वत्र प्रेत करीं नीत वाले के प्रवास के । स्वत्र के एक स्वत्र प्रवास के प्रवास	नी 💮
भेदता नहीं । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्गारी से सेमल के रूई को आग पकडती । मतलब सेमल की रूई झूठी होगी तो आग नहीं पकडती है वै ही कमीं मनुष्य ज्ञान धारण नहीं करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजड़ा स् संग संसार का खेल,खेल नहीं सकता है वैसे ही कमीं मनुष्य ज्ञान धारण नहीं कर सक है । जैसे बखतर(कवच)पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड़्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता वैसे ही कमीं मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं स्तागुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।। जिस अंद आदीत ।। आँख कारी यूँ कमीं ।। ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अई पोपा कूं चिमीं ।। चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दु:ख पावे ।। यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साथ संगत को जोग ।। दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कमीं जीव विस्तर की जागा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे का नशा रहता है, उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंद आपरे का लगता स्वाम के स्वत्य के स्वत्य स्वत्य से	र्गी राम
ही कमीं मनुष्य ज्ञान धारण नही करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजडा स् संग संसार का खेल,खेल नही सकता है वैसे ही कमीं मनुष्य ज्ञान धारण नही कर सक है । जैसे बखतर(कवच)पहन लेनेपर घाव नही लगता है वैसे ही नरकीय कमीं मनुष्य ह हान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कमीं मनुष्य ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड़्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता वैसे ही कमीं मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कमीं मनुष्य क ज्ञान नहीं भेद सकता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।। उम्म अाक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कमीं ।। ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अई पोपा कूं चिमीं ।। पम अर्थ दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दुःख पावे ।। याम उसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कमीं जीव क पाम पोग कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे	री राम
संग संसार का खेल, खेल नहीं सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नहीं कर सक है । जैसे बखतर (कवच) पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड़्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए, तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं भेद सकता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।। पाम आक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। पाम पर्य दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। पाम पर्य दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। पाम पर्य कुम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। पाम पर्य कल्या सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। पाम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव विस्त कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे (क्लान के) प्रकार के प्रकार कर्मी जीव विस्त कर्मी प्रवास के प्रकार के प्रवास है। सकता है प्रवास के प्रवास कर्मी जीव विस्त कर्मी जीव विस्त कर्मी प्रवास के प्रवास के प्रवास हो प्रवास है। स्वत्स कर्मी जीव विस्त कर्मी प्रवास है प्रवास हो प्रवास हो प्रवास हो । स्वत्स कर्मी जीव विस्त कर्मी प्रवास हो प्रवास हो प्रवास हो । स्वत्स कर्मी जीव विस्त हमी प्रवास हो । स्वत्स हो प्रवास हो । स्वत्स हमी प्रवास हमी जीव हमी जीव हमी जीव हमी हमी । स्वत्स हमी प्रवास हमी प्रवास हमी स्वत्स हमी स्वत्स हमी	से राम
है । जैसे बखतर(कवच)पहन लेनेपर घाव नहीं लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं भेद सकता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।। अक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अई पोपा कूं चिर्मी ।। सर्प दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दु:ख पावे ।। यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव विस्तर कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे	श्री राम
शान नहीं लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नहीं दे शान सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड़्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं भेद सकता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।। शान आक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अई पोपा कूं चिर्मी ।। सर्प दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। चहुँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दु:ख पावे ।। शाम यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। राम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव व भोग कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे	∏ राम
राम सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नहीं ले सकता । अनेक प्रकार के लड्डू बनाये पर खाये बिना परख नहीं होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य क ज्ञान नहीं भेद सकता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।। राम आक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। राम सर्प दुध बिष होय ।। अई पोपा कूं चिर्मी ।। राम चहूँ दिस सायर नीर ।। अई पोपा कूं चिर्मी ।। चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दु:ख पावे ।। राम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम प	
खाये बिना परख नही होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नहीं चढ सकता वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं लगता है । लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं भेद सकता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।। अक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अई पोपा कूं चिमी ।। सर्प दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासों दुःख पावे ।। यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव विस्तित कर्मी जीव विस्तित हो। मोतीबिंदु ऑपरे	
वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नहीं लगता है। लाखों उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य के ज्ञान नहीं भेद सकता है। ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले। ।। १।। राम राम राम राम राम राम राम र	4
शाम शान नहीं भेद सकता है। ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले। ।। १।। शाम आक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। राम ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अई पोपा कूं चिर्मी ।। सर्प दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दु:ख पावे ।। राम यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। राम प्रम दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। राम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव व	
आक ईख आदीत ।। आँख कारी यूँ कर्मी ।। राम राम राम राम राम राम राम र	राम
ज्यूँ मर्कट सिर्पाव ।। अई पोपा कूं चिर्मी ।। सर्प दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दु:ख पावे ।। याम यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। राम दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। राम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव व भोग कर्म का नशा रहता है, उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नहीं । मोतीबिंदु ऑपरे	राम
सर्प दुध बिष होय ।। मरे खंर मिसरी खावे ।। चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दु:ख पावे ।। याम यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। राम दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। राम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव विस्ता कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नही । मोतीबिंदु ऑपरे	राम
चहूँ दिस सायर नीर ।। प्रेत प्यासो दुःख पावे ।। याम यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। राम दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। राम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव र	
यूँ क्रम हीण के नहीं बणे ।। साध संगत को जोग ।। राम दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। राम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव व गम भोग कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नही । मोतीबिंदु ऑपरे	राम
राम दाख फळया सुखराम के ।। हुवे काग के रोग ।। २ ।। राम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव र भोग कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नही । मोतीबिंदु ऑपरे	राम
राम जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव र राम भोग कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नही । मोतीबिंदु ऑपरे	राम
(مرمور مرابع المربع الم	गे राम
(oprated) मनुष्य सुरज के प्रकाश में रह नहीं सकता ऐसा ही कर्मी जीव ज्ञान में रह न	ड़ राम
सकता । जैसे बन्दरको अच्छे कपडे पहनाये,तो भी वह बन्दर उसे नखो से,दातो	स
राम	राम

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ा। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। राम फाडकर फेक देता है। इसी तरह से कर्मी मनुष्य ज्ञान को फेक देता है और मारवाड देश मे अरड पोपा नामक एक जाती के लोग है। उन्हें किसीने चिर्मी(गुंज)दिखला दिया राम तो वे अरड पोपा गाँव छोडकर भाग जाते है ऐसे ही कर्मी मनुष्य से कोई ज्ञान बतायेगा तो राम अरड पोपा के जैसे भाग जाते है । कोई यदी सर्प को दूध पिलाया,तो भी वह सर्प उस राम राम दूध का जहर बना देता है ऐसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान बताने पर वह कर्मी मनुष्य अमृत राम रूपी ज्ञान को विष बना देता है । खडीशक्कर गधे को खिलाने पर वह गधा मर जाता है ऐसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान मे नुकसान समजता है । चारो ओर बडी-बडी नदीयाँ और राम राम तालाब पाणी से भरे है परन्तु प्रेत(भूत)को वह पानी न मिलने से,वह प्यासे हुए दु:खी रहते है । भूत प्रेत को नदीयो और तालाब का पाणी पीने के लिए नही मिलता है । वैसे राम ही कर्मी मनुष्य को साधू संगत का योग नही मिलता है । जैसे अंगूर वैशाख महीने मे राम फलता है उस समय कौए के मुँख मे रोग हो जाता है जिससे वह अंगूर खा नही पाता है राम वैसे ही साधू की संगती मे, कर्महीन मनुष्य के आड़े कोई न कोई विघ्न आ जाता जिससे राम राम उसका साधू का संगत का योग नही जुडता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज राम राम बोले । ।।२।। ज्हाँ आन की सेव ।। साध की संगत न भावे ।। राम राम जेसे जुर को जोर ।। रूच अन की मिट जावे ।। राम राम कृमी तजे कपूर ।। मेल माखि नित जोई ।। राम राम ब्होता दूधाँ धोय ।। कोयला ऊजळ न होई ।। राम राम सदा सजीवण जीव कूं ।। सुन पाती अन सूँ मरे ।। युँ क्रम ऊदो सुखरामजी ।। ब्रम्ह भक्त केसें करे ।। ३ ।। राम राम राम जहाँ जिसके घर मे अन्य देवताओं की भक्ती होती है उसको साधू संगती अच्छी नहीं राम लगती है । जैसे किसी को बुखार रहा तो उस बुखारके जोर से अन्न की रूची मिट जाती राम है अन्न मीठा नहीं लगता और अन्न से दुर्गन्ध उसे मालुम पडती है । वैसे ही जिसे कर्म राम राम रूपी बुखार है । उसे अन्नरूपी संत की संगती अच्छी नही लगती है । कृमी(कीडे)कपूर राम का त्याग करते है । वैसे ही कर्मी मनुष्य साधू संत का त्याग करते है और ये मिकखयाँ <mark>राम</mark> राम हमेशा मैली गन्दी जगह पर आकर बैठती है इसी तरह से कर्मी मनुष्य हमेशा बुरे लोगो का राम संग करना चाहते है । कोयला को दूध से कितना भी धोये तो भी वह कोयला सफेद नही होगा ऐसे ही कर्मी मनुष्य को कितना भी ज्ञान बताया तो भी उसका कोयला के जैसा राम राम कालापन नही जाता है । अन्न हमेशा सभी जीवो का संजीवन है परन्तु यही राम अन्न,सन्निपात(एक प्रकार का ज्वर)हुए मनुष्यको देने पर वह मनुष्य मर जाता है ऐसे ही राम जिसके पहले के नरकीय कर्म उदित हो गये है ऐसा कर्मी मनुष्य सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती राम कैसे करेगा ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले। ।।३।। राम राम

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

राम	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	राम
राम	ऊदे भाण प्रकास ।। जीव अेता नही राजी ।।	राम
राम	गुघू तस्कर चोर ।। चमक प्र भयँग बेराजी ।।	राम
राम	दीयो मान मुसाल ।। जोत हीरा की जावे ।। यूँ पतवृता कूं देख ।। बेसीया ब्हो दु:ख पावे ।।	राम
राम	पू नरावृता पूर पंज ११ वरावा का पु.ज नाव ११	राम
	मान चक गावगा क्वे ॥ त्यो क्वा प्रती गाम ॥ ४ ॥	
राम	युरुत के उगने पर जीव खुश होते है पुरन्त उल्ला तुम्कर (चीर) चुमुक (पाकोदी) पर	राम
राम	(चमगादड),भुजंग(सर्प)ये नाराज होते है । दीपक,मशाल,हीरे की ज्योती सुर्य प्रकाश से	राम
राम		
	पृथ्वीपर हरीजन को प्रगट हुआ देखकर कर्मी मनुष्य मुरझा जाता है । हरीजन के ज्ञान का	
राम	चक्र कर्मी मनुष्य की कनपटी में लगता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।	राम
राम	।। ४ ।। ।। इति क्रमी नर को अंग संपूरण ।।	राम
राम		 राम
राम		राम
	अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट्र	
	जवकरा . सरारवरंग्या सरा रावाविक्सगणा अपर एवन् रानरगृहा परिवार, रानद्वारा (जगत) जलगाव – महाराष्ट्र	